GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

विश्वनाथकृत चन्द्रकला नाटिका का समिक्षात्मक अध्ययन

प्रवीण चौहान
शोध छात्र
संस्कृत विभाग
श्री गोविन्द गुरु युनिवर्सिटी,गोधरा

भूमिका

संस्कृत नाट्यपरंपरा में विशिष्ट स्थान रखनेवाले नाटककारों में विश्वनाथ का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। उनकी रचना "चन्द्रकला" नाटिका, रस, अलंकार, चरित्र-चित्रण तथा संप्रेषणीयता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोधपत्र में चन्द्रकला नाटिका का गूढ़ अध्ययन किया गया है।

विश्वनाथ का साहित्यिक योगदान

विश्वनाथ संस्कृत के एक सशक्त नाटककार हैं, जिन्होंने नारी चेतना, धर्मनिष्ठा, संघर्षशीलता तथा श्रृङ्गारिक भावनाओं को गहनता से प्रस्तुत किया है। उनकी रचना “चन्द्रकला” नाटिका केवल एक साहित्यिक ग्रंथ नहीं, अपितु नारी के आत्मसम्मान एवं आत्मबल का प्रेरक स्वरूप है | विश्वनाथ के काव्य में भावना की समृद्धि और वाक्यविन्यास की कला दोनों परिपक्व रूप में मिलती हैं।

परिचयः

चन्द्रकला नाटिका एक प्रहसनात्मक लघुनाटिका है, जिसमें राजा, विदूषक, नायिका चंद्रकला, और अन्य पात्रों के माध्यम से समाज के कुछ पहलुओं की ओर संकेत किया गया है।

यह श्लोक चन्द्रकला के सौंदर्य और उसकी चतुरता का संकेत देता है।

पात्र-वर्णनम्

1. चन्द्रकला – मुख्य नायिका, बुद्धिमती, रूपवती एवं विनोदमयी।
2. राजा – नायक, जो चन्द्रकला से प्रभावित है।
3. विदूषकः – हास्यप्रद पात्र, जो संवादों में प्रहसन रचता है।
4. सखी – नायिका की सहचरी, जो उसकी योजनाओं में सहायक है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

कथावस्तु

नाटक का मूल विषय एक राजा और चन्द्रकला के बीच के प्रेम, विनोद, और सामाजिक छल-प्रपंचों के बीच की नाटकीयता है। इसमें नायिका अपनी बुद्धिमत्ता से परिस्थितियों पर नियंत्रण रखती है।

नाट्यतत्त्वविचारः

रस – मुख्यतः शृङ्गाररस प्रधान है, किंचित हास्य एवं करुणा भी है।

❖ **श्रृंगार रस :**

सा दृष्टिर्नवनीलनीरजमयी वृष्टिस्तदप्याननं
हेलामोहनमन्त्रयन्त्रजनिताकृष्टिर्जगच्चेतसः |
सा भ्रुवल्लिरनङ्गशाङ्र्गधनुषो यष्टिस्तथास्यास्तनु-
र्लावण्यामृतपुरपूर रणमयी सृष्टि परा वेधसः ||

❖ **हास्य रस :**

आश्चर्यम् ! ताड विलम्बितं परिसृत्य दीधिकांदधृतसलि-
लकुम्भेन निर्वाप्यतामे वहिनः |

अलंकार – उपमा, रूपक, यमक आदि अलंकारों का प्रयोग अत्यंत प्रभावकारी है।

संवाद शैली – सरल एवं व्यंग्यात्मक, जिससे दर्शक/पाठक जुड़ता है।

विश्लेषणात्मक बिंदु

1. नायिका-प्रधान नाटिका होने के कारण स्त्री-स्वतंत्रता का संकेत।
2. हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक आडंबरों की आलोचना।
3. भाषा की सरलता एवं लालित्य दर्शनीय है।

करपल्लवसङ्गेन सममेव मृगीदृशः!
निमग्नमिव मे स्वान्तमुदन्वति सुधामये!!

इस श्लोक के द्वारा कवि की वर्णन कला का परिचय प्राप्त होता है |

निष्कर्ष

विश्वनाथकृत चन्द्रकला नाटिका एक लघु होते हुए भी विषयवस्तु, पात्र-चित्रण, और नाटकीय तत्वों की दृष्टि से अत्यंत संपूर्ण काव्यात्मक नाट्यरचना है। यह न केवल रसिक पाठकों के लिए अपितु शोधार्थियों के लिए भी गंभीर अध्ययन का विषय है।

GYANBODH
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 3
Special Issue: 1
July: 2025

सन्दर्भग्रन्थः

1. चन्द्रकला- विश्वनाथ
संपादक - प्रभातशास्त्री साहित्याचार्य
प्रकाशक - देवभाषा प्रकाशन, दरागंज, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण
2. साहित्यदर्पण- विश्वनाथ,
प्रकाशक - चौखम्बा विद्या भवन चौक, वाराणसी,
मुद्रक - विद्यालय प्रेस वाराणसी, १ स. २०१४
3. साहित्यदर्पणाम्- विश्वनाथ,
व्याख्याकार -आचार्य शेषराजशर्मा रेग्मी,
प्रकाशन -कृष्णदास अकादमी, वाराणसी